• वास्तु...

सकारात्मक ऊर्जा...

वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि दूरियां बने का कारण घर और हमारे आसपास मौजूद वास्तुदोष भी हो सकते हैं। कुछ आसान से उपाय वास्तु में बताए गए हैं, जिन्हें अपनाकर हम अपने जीवन में खोई हुई खुशियों को वापस पा सकते हैं। घर में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास करें। घर की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। घर में अगर विचलित करती या उदास तस्वीरें लगी हैं तो इन्हें तुरंत हटा दें। पति-पत्नी के बीच संबंधों में मधुरता लाने के लिए घर में राधा-कृष्ण का चित्र लगाएं। घर के ड्राइंग रूम में भगवान विष्णु का चित्र लगाएं। माता-पिता या भाई-बहनों के बीच मनमुटाव रहता है तो घर की बैठक में क्रिस्टल बॉल रखें। घर के पूजा स्थल में हनुमान जी की मूर्ति स्थापित करें। इससे परिजनों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है। बेडरूम में हल्के रंग की बेडशीट बिछाएं। बेड के सामने शीशा है तो इसे हटा दें। बेड के सामने शीशा होने से दंपति के बीच कलह पैदा होती

है। घर में बेसमेंट है और यह खाली पड़ा है तो यह अवसाद का कारण बन सकता है। बेसमेंट के बाहर एक ब्रास बेल टांग सकते हैं। बेडरूम में अधिक महिलाओं की तस्वीर न लगाएं। दो बेड को जोड़कर न सोएं। बेड के अंदर बर्तन, किताबें, टूटा सामान न रखें। जीवनसाथी को जो बात पसंद न हो, वह बात न करें। घर में शंख या सीपी अवश्य रखें। परिवार के सभी सदस्य एक साथ पूजा में भाग लें। शनिवार के दिन आम या अशोक की टहनी घर में लाएं। महीने में कम से कम एक बार मिठाई लाकर भगवान को भोग लगाएं और पूरे परिवार में बांटे। ऐसा करने से वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। परिवार में प्रेम बना रहता है।

• भीष्म जयंती...

छह महीने बाणों की शैय्या पर लेट

शास्त्रों के अनुसार माघ मास की कृष्ण पक्ष की नवमी को महाभारत के भीष्म पितामह की जयंती मनाई जाती है। भीष्म अष्टमी उत्तरायण के समय होती है, जो कि सूर्य के उत्तरार्ध से शुरू होता है, जो वर्ष का पवित्र अर्धांश है। भीष्म अष्टमी को सबसे शुभ और भाग्यशाली दिनों में से एक माना जाता है जो भीष्म पितामह की मृत्यु का प्रतीक है। यह एक ऐसा दिन था जिसे भीष्म पितामह ने अपने शरीर को छोड़ने के लिए खुद चुना था। इस बार 18 जनवरी, 2020 शनिवार को पड़ रही है। भीष्म पितामह छह महीने तक बाणों की शैय्या पर लेटे थे। भीष्म पितामह महाभारत की कथा के एक ऐसे नायक हैं, जो आरंभ से अंत तक इसमें रहे।

भीष्म देवी गंगा और राजा शांतनु के आठवें पुत्र थे जिनका मूल नाम देवव्रत था जो उनके जन्म के समय दिया गया था। देवव्रत ने जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन किया। देवव्रत को मुख्य रूप से मां गंगा द्वारा पोषित किया गया था और बाद में महर्षि परशुराम को शास्त्र विद्या प्राप्त करने के लिए भेजा गया था। उन्होंने शुक्राचार्य के मार्गदर्शन में महान युद्ध कौशल और सीख हासिल की और अजेय बन गए। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, देवी गंगा देवव्रत को अपने पिता, राजा शांतनु के पास लाईं और फिर उन्हें हस्तिनापुर का राजकुमार घोषित किया गया। इस दौरान, राजा शांतनु को सत्यवती नाम की एक महिला से प्रेम हो गया और वह उससे विवाह करना चाहते थे। सत्यवती के पिता ने एक शर्त पर गठबंधन के लिए सहमति व्यक्त की कि राजा शांतनु और सत्यवती की संतानें ही भविष्य में हस्तिनापुर राज्य का शासन करेंगी। स्थिति को देखते हुए, देवव्रत ने अपने पिता की खातिर अपना राज्य छोड़ दिया और जीवन भर कुंवारे रहने का संकल्प लिया। ऐसे संकल्प और बलिदान के कारण, देवव्रत भीष्म नाम से पूजनीय थे और उनकी प्रतिज्ञा को भीष्म प्रतिज्ञा कहा गया। यह सब देखकर, राजा शांतनु भीष्म से बहुत प्रसन्न हुए और इस प्रकार उन्होंने उन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान दिया। अपने जीवनकाल के दौरान भीष्म को भीष्म पितामह के रूप में बहुत सम्मान और मान्यता मिली। महाभारत के युद्ध में वह कौरवों के साथ खड़े थे और उन्होंने उनका पूरा समर्थन किया। भीष्म पितामह ने शिखंडी के साथ युद्ध नहीं करने और उसके खिलाफ किसी भी प्रकार का हथियार न चलाने का संकल्प लिया था। अर्जुन ने शिखंडी के पीछे खड़े होकर भीष्म पर हमला किया और इसलिए भीष्म घायल होकर बाणों की शय्या पर गिर पड़े। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, यह माना जाता है कि जो व्यक्ति उत्तरायण के शुभ दिन पर अपना शरीर छोड़ता है वह मोक्ष प्राप्त करता है, इसलिए उन्होंने कई दिनों तक बाणों की शैय्या पर प्रतीक्षा की और अंत में अपने शरीर को छोड़ दिया। उत्तरायण अब भीष्म अष्टमी के रूप में मनाया जाता है।

षटतिला एकादशी 20 जनवरी को है। पुराणों में षटतिला एकादशी का बहुत अधिक महत्व बताया गया है।

जो व्यक्ति षटतिला एकादशी का व्रत करता है। उसे कन्यादान और स्वर्णदान का फल प्राप्त होता है। इतना इस मात्र एक व्रत का फल हजारों साल तक की तपस्या के बराबर बताया गया है....

षटतिला एकादशी...

षटतिला एकादशी का व्रत माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी के दिन किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु को तिल और तिलों से बनी चीजें अर्पित करने का विधान है। इस दिन व्रत करने वाले व्यक्ति को कन्यादान, स्वर्णदान और हजारों वर्ष की तपस्या का फल प्राप्त होता है। षटतिला एकादशी 20 जनवरी को है। पुराणों में षटतिला एकादशी का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। जो व्यक्ति षटतिला एकादशी का व्रत करता है। उसे कन्यादान और स्वर्णदान का फल प्राप्त होता है। इतना इस मात्र एक व्रत का फल हजारों साल तक की तपस्या के बराबर बताया गया है। यह व्रत मनुष्य को न केवल जीवन के सभी सुखों की प्राप्ति कराता है। बल्कि इस व्रत के करने से मृत्यु के बाद बैकुंठ धाम में स्थान भी प्राप्त होता है। षटतिला एकादशी में छह प्रकार के तिलों के प्रयोग के बारे में बताया गया है।

पहला तिल मिलाकर जल से स्नान करना, दूसरा तिल के तेल से मालिश करना, तीसरा तिल के तेल से हवन करना, चौथा तिल के पानी को ग्रहण करना, पांचवा तिल का दान करना और छठा तिल से बनी चीजों का सेवन करना।

षटतिला एकादशी की पूजा विधि: षटतिला एकादशी दशमी तिथि से ही शुरु हो जाता है। इसलिए षटतिला एकादशी के नियमों का पालन दशमी तिथि से ही करें। षटतिला एकादशी के दिन सूर्योदय से पहले उठें। इसके बाद साफ वस्त्र धारण करें। लेकिन काले और नीले रंग के वस्त्र बिल्कुल भी धारण न करें। इसके बाद एक साफ चौकी पर गंगाजल के छिंटे मारकर उस पर पीला कपड़ा बिछाएं और भगवान विष्णु की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें।

इसके बाद उस प्रतिमा या तस्वीर को पंचामृत से स्नान कराएं जिसमें तुलसी दल अवश्य हो। इसके बाद दुबारा भगवान विष्णु को गंगाजल से स्नान कराएं। इसके बाद भगवान विष्णु को पीले रंग के फूलों की माला पहनाएं और उन्हें पीले वस्त्र, पीले रंग के फूल, पीले रंग के फल, काले और सफेद तिल, नैवेद्य आदि अर्पित करें। इसके बाद भगवान विष्णु के मंत्र-

ऊं नमों भगवते वासुदेवाय नमः या
ऊं नमों नारायणाय

मंत्र का जाप करें और विष्णु सहस्त्रनाम का भी पाठ करें। मंत्र जाप करने के बाद तिलों से हवन अवश्य करें। इसके बाद भगवान विष्णु को तिलों से बनी चीजों का भोग लगाएं। भोग लगाने के बाद भगवान विष्णु की धूप व दीप से आरती उतारें। आरती उतारने के बाद भगवान के बाद किसी ब्राह्मण या निर्धन व्यक्ति को भोजन अवश्य कराएं। भोजन कराने के बाद उस ब्राह्मण या निर्धन व्यक्ति को तिलों का दान दक्षिणा सहित अवश्य करें।क्योंकि इस दिन तिलों के दान को अधिक महत्व दिया जाता है।

षटतिला एकादशी की कथा

पौराणिक कथा के अनुसार एक नगर में एक महिला रहती थी वह भगवान विष्णु की बहुत बड़ी भक्त थी। वह भगवान विष्णु की बहुत अधिक पूजा पाठ किया करती थी। एक दिन भगवान विष्णु उस महिला से प्रसन्न हो गए और एक भिखारी का वेश बनाकर उस महिला के घर पर दान मांगने के लिए आ गए। उस महिला ने क्रोध में आकर भगवान के पात्र में एक पत्थर डाल दिया। उस महिला को ऐसा करने से जीवन के सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति तो हो गई। लेकिन उसे खाने के लिए कुछ भी न मिला। वह सोचने लगी की ऐसी सुख सुविधा का क्या लाभ जिससे वह खाने की कोई वस्तु तक नहीं खरीद सकती। इसके बाद उसने फिर भगवान से प्रार्थना की और अपनी गलती का कारण पूछा। तब भगवान ने उसे दर्शन देकर बताया कि जब तक कठोर तप के बाद कुछ दान किया जाता। तब तक तप का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता। विशेषकर षटतिला एकादशी के दिन तो दान अवश्य करना चाहिए।

इस दिन तिल और तिल से बनी वस्तुओं का दान करना सबसे ज्यादा शुभ होता है। भगवान की बात सुनकर उस महिला षटतिला एकादशी के दिन तिल से बनी मिठाई का दान किया। इसके बाद भगवान विष्णु की कृपा से उस महिला के पास न केवल ऐशो आराम की सभी वस्तुएं थी। बल्कि उसके अन्न के भंडार में भी कोई कमी नही थी।

• कभी नहीं...

सूर्यास्त के बाद न करें ये...

हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार ये काम सूर्यास्त के बाद नहीं करना चाहिए। मान्यता है कि शाम को यदि आप सूर्यास्त के बाद स्नान करते हैं तो माथे पर चंदन नहीं लगाना चाहिए। कारण यह है कि चंदन लगाकर यदि आप रात में सोते हैं तो चंदन की पपड़ी आपकी आंखों में गिर सकती है जो कि आखों की रोशनी के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है। दूसरी मान्यता यह है कि रात में दूध में थोड़ी हल्दी या केशर मिलाकर ही पीना चाहिए। कुछ न मिले तो थोड़ा गुड़ ही मिला लें। इसके पीछे तक यह है कि दूध की प्रकृति ठंडी होती है और सादा दूध रात में ज्यादा ठंडा होगा जिससे आपको जुकाम-खांसी की समस्या हो सकती है। आप बीमार होंगे तो लक्ष्मी भी आप से दूर होंगी।

मान्यता है कि रात में कपड़े नहीं धुलना चाहिए। कहा जाता है कि रात में कपड़े धुलने और उन्हें खुले आसमान में फैलाने से कपड़े में निगेटिव एनर्जी प्रवेश करती है। ऐसे कपड़ों से आपके मन पर बुरा असर पड़ता है। कपड़े शाम तक नहीं सूखें तो उन्हें रात में छत के नीचे फैलाएं।

• घर में लाएं ये...

❑ *धातु से बना कछुआ, घोड़ा, ड्रैगन या फिर फीनिक्स अपने घर लाकर उन्हें कहीं साफ स्थान पर रख सकते हैं। इससे सुख सौभाग्य में वृद्धि करता है, ऐसी मान्यताएं कहती हैं। विंड चाइम भी आप घर में ला सकते हैं। फेंगशुई के अनुसार, विंड चाइम को हमेशा घर के उत्तर-पूर्व कोण में ऐसी जगह लगाएं, जहां से इसकी थोड़ी-थोड़ी देर में आवाज आती रहे। इस तरह आपके सौभाग्य में वृद्धि होगी। नए साल 2020 पर आप अपने घर के लिए आप लाफिंग बुद्धा ला सकते हैं। इस आप अपने घर पर उत्तर-पूर्व कोण में 30 डिग्री की ऊंचाई पर स्थापित करें।*